chapter 9

अध्याय-९

उपसंहार - मूल्यांकन

अध्याय -६

उप संहार -मूल्यांकन

प्रस्तुत प्रबन्ध के पूर्व वर्ती अध्यायों मेंराम काव्य धारा के अनुशीलन के साथ साथ रघुवंश दीपक और उसके रचयिता का जो अध्ययन प्रस्तुत किया गया है उससे सहजराम के कृतित्व का आकलन सरलता से किया जा सकता है। किसी भी कृति का अध्ययन प्रथम तो उसकी , उससे सबंधित काव्य धारा तथा द्वितीयत: युग गत पृष्ठभूमि पर किया जाना इसलिये आवश्यक हो जाता है ताकि उसके आधार पर कवि की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जा सके और यथासम्भव व्यापक साहित्य धारा के अन्तर्गत उसका स्थान निर्धारण भी हो सके । अत: पूर्ववर्ती अध्यायों से सबंधित विवेचन की भूमिका मेंहम यहां उनसे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर आलोच्य कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास कर रहे हैं ।

कवित्व की दृष्टि से जब हम `रघुवंश दीपक ` पर विचार करते हैं तो वह एक अत्यन्त सफल काव्य ठहरता है। समस्त मानवीय संवेदनाओं तथा अनुभूतियों को कवि ने जिस प्रकार कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है वह उसके व्यापक अनुभवों तथा गम्भीर चिन्तन को पूर्णत: व्यक्त करती है। उसका काव्य वाणी का विलास मात्र अथवा बौद्धिक व्यायाम न था। जीवन और जगत के मध्य होने वाले समस्त कार्य व्यापारों को उसने विभिन्न दृष्टिकोणों से परख कर इस प्रकारप्रस्तुत किया है कि वे अपनी स्वाभाविकता के कारण हमारे निज के अनुभव बन गये हैं । सुख- दुख ,हानि लाभ, जीवन-मरण, उत्थान-पतन, जीवन कीसभी सम विषम परिस्थितियों को उद्घाटित करने में कवि ने पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। उसका अभिव्यक्ति पक्ष उतना ही कलात्मक तथा सक्षम दिखाई देता है जितना कि उसका अनुभूति पक्ष व्यापक तथा विविध भाव भूमियों को स्पर्श करता हुआ चलता है। भाषा उसके भावों की अनुगामिनी होकर छन्द, अलंकारादि विभिन्न काव्यांगो से विभूषित

उस सद् गृहिणी केसमान आचरण करती हुई दिखाई देती है जो एक ओर तो अपने सौन्दर्य से प्रियतम का मन मोह लेती है साथ ही अपने सद्गुणों से उसके मनोराज्य की एक मात्र प्रशासिका बन जाती है। `रघुवंश दीपक` का कवि मूलत: कवि था अत: उसकी विराट चेतना कलात्मक अभिव्यक्ति के साथ साथ सौन्दर्य मूलक काव्य चेतना के रूप में प्रकट हुई है ।

सम सामयिक काव्य प्रवृत्तियों की दृष्टि से `रघुवंश दीपक` हिन्दी के रीतिकाल के अन्तर्गत आता है किन्तु वस्तुत: यह काव्य चेतना का वह सुवासित कमल है जो समकालीन श्रृंगारिकता के पंक में जन्म लेकर भी उससे अलग अत कहा जा सकता है। रीतिकाल मुख्यत: मुक्तक काव्य रचना का युग था । इस काल के प्राय: अधिकांश कवि यश: प्रार्थी थे साथ ही राज्याश्रय पाकर विलासिता में आकण्ठ मग्न होकर अपने आश्रयदाताओं के गुण गान में ही अपने कवि कर्म को सफल मानते थे । अत: छोटी छोटी चमत्कारपूर्ण रचनाओं से उनका मनोरंजन करना ही उन्हें अभीष्ट था। सहजराम जी ने रीतिकाल की इस मूल चेतना के विरुद्ध जीवन के शाश्वत मूल्यों तथा जीवनगत सत्य को एक व्यापक काव्य फलक पर चित्रित करने का प्रयास किया जिसके लिये उन्होंने प्रबन्ध काव्य धारा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और प्राकृत जन-गुण गान के स्थान पर श्रीराम के महच्चरित्र को जन जीवन के सम्मुख प्रस्तुत किया । इस प्रकार उन्होंने जीवन के समग्र चित्र को उद्घाटित कर भक्ति काल की काव्य चेतना से अपना सम्बन्ध स्थापित किया। वस्तुत: यह वैसा ही कठिन कार्य था जैसा कि कोई व्यक्ति तीव्रगति वाली नदी के प्रवाह में धारा के विरुद्ध दिशा में तैरने का प्रयास करता हुआ पार जाने की चेष्टा करे । हम यह गर्व के साथ कह सकते हैं कि `रघुवंश दीपक` रीतिकाल की प्रबन्ध काव्य धारा की सर्वोच्च कृति है। जिस प्रकार भक्ति काल ने `पद्मावत्` तथा `रामचरित मानस` जैसी महान् कृतियों को प्रदान कर हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया है उसी प्रकार रीतिकाल ने रघुवंश दीपक जैसे सशक्त

महाकाव्य को प्रदान कर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है ।

रीति कालीन मूल काव्य चेतना के स्थान पर जिस प्रकार `रघुवंश दीपक ` में भक्ति कालीन काव्य चेतना के दर्शन होते हैं , उसी प्रकार समकालीन युग चेतना में भी वह रीति काल से भिन्न एक नवीन चेतना से सम्पृक्त दिखाई देता है। `रघुवंश दीपक ` में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक चेतना का जो रूप हमें दिखाई देता है वह समकालीन युग सन्दर्भ को तो व्यंजित करता ही है साथ ही भारतीय जन जीवन की उस संघर्ष पूर्ण कहानी को भी व्यक्त करता है जो तत्कालीन शासकों की बर्बरता, धर्मान्धता तथा असहिष्णुता एवं अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध अपने निजी अस्तित्व की रक्षा के लिये जूझ रहा था। औरंगज़ेब तथा उसके उत्तराधिकारियों की पाशविकता तथा अत्याचारों से क्षुब्ध भारतीय जन मानस की संघर्ष गाथा ही मानों ` रघुवंश दीपक ` में वर्णित राम-रावण संघर्ष की कहानी बन गया हो। अस्तु युग की भूमिका में भी `रघुवंश दीपक ` का वही स्थान आता है जो गोस्वामी तुलसीदास जी के `राम चरित मानस ` का है। इस काल की अन्य रचनाओं में केवल गोविन्द रामायण , ही ऐसी रचना है जो युगीन संघर्ष की मूल चेतना पर आधारित है क्योंकि उसका कवि स्वयं ही इस संघर्ष का नायक था । गोविन्द रामायण के राम युद्ध वीर नायक थे तथा उसमेंवर्णित विभिन्न युद्ध प्रकारान्तर से गुरु गोविन्दसिंह जी केद्वारा लड़े गये युद्धों के ही विस्तृत विवरण प्रस्तुत करतेहैं + जो कवि के भोगे हुये यथार्थ सत्य की प्रामाणिक अभिव्यक्ति ही कहे जायेंगें ।

इस प्रकार ` गोविन्द रामायण` और `रघुवंश दीपक ` को छोड़कर इसकाल की अन्य रचनाओं में युग बोध का सम्यक् रूप नहीं मिलता केवल मुक्तक काव्य धारा में भूषण का काव्य इसका अपवाद ठहरता है। अस्तु ` रघुवंश दीपक ` का महत्व युग की भूमिका में स्वत: सिद्ध हो जाता है।

पूर्व वर्ती अध्यायों के विवेचन में एक अन्य तथ्य जो हमारे सम्मुख उभर कर आता है वह यह कि हमारा आलोच्य कवि अपनी काव्य चेतना में

महाकवि तुलसीदास जी का अनुगामी था। `रघुवंश दीपक ` में कवि के आत्म - कथन के आधार पर हमने इस तथ्य को स्वीकार किया है किन्तु इस अनुगामिता में अन्धानुकरण न था। कवि के विवेक शील मस्तिष्क तथा सार ग्राहिणी काव्य प्रतिमा ने `रघुवंश दीपक ` के स्वतंत्र अस्तित्व की रक्षा की है। तुलसीदास जी की अनुगामिता कवि ने केवल उद्देश्य में ही स्वीकार की है। कवित्व तथा साहित्यिक चेतना में वह पूर्णत: स्वतंत्र रहा है। कथावस्तु की दृष्टि से सहजराम जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी का अनुगमन नहीं किया । विभिन्न सूत्रों से प्राप्त होने वाली राम कथा को उसने `रघुवंश दीपक ` में संकलित कर हिन्दी राम काव्य धारा मे एक नया मोड़ लाने का प्रयास किया है। यद्यपि उसका यह संकलन दोष रहित नहीं हो पाया फिर भी कहीं कहीं व्यापक फलक पर उसकी मौलिक चेतना ने नये चित्र अवश्य संवारे हैं । `रघुवंश दीपक ` में ऐसे अनेक कथा प्रसंग हैं जिसमें पाठक को रसमग्न होने का पर्याप्त अवकाश मिलता है और कवि ऐसे प्रसंगों की योजना में पूर्णत: सफल भी रहा है ।

सोद्देश्य रचना होने के कारण `रघुवंश दीपक ` में विराट चेतना पर आधारित एक महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिये कवि ने महच्चरित्र की सृष्टि की है जो वस्तुत: समस्त भक्ति काव्य की उद्देश्य मूलक परम्परा के अनुरूप ही है। शैली की दृष्टि से उस पर पौराणिकता का आरोप उसी प्रकार आ सकता है जिस प्रकार `राम चरित मानस ` पर किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य को भी पौराणिक महाकाव्य से अभिहत किया गया है किन्तु जिस प्रकार `रामचरित मानस ` का महत्व इससे अप्रभावित रहकर उसे हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ रचना का सम्मानित स्थान प्रदान करता है उसी प्रकार `रघुवंश दीपक ` भी इस धारा की महत्वपूर्ण रचना सिद्ध होती है और राम काव्य -धारा के अन्तर्गत रामचरित मानस के पश्चात् उसे ही द्वितीय स्थान दिया जा सकता है ।

हिन्दी राम काव्य धारा में `रघुवंश दीपक` का स्थान

हिन्दी राम काव्य धारा के सम्यक् अनुशीलन के आधार पर इस धारा की और महत्वपूर्ण रचनायें हमारे सम्मुख आती हैं उनमें सर्व प्रथम गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस का महत्व तो सर्व विदित है ही। सम्पूर्ण हिन्दी जगत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय में उसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो चुका है साथ ही वह विश्व साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना भी स्वीकार कर ली गई है। समस्त मानवीय चेतना का जो आदर्श मय भव्य रूप `रामचरित मानस` के माध्यम से विश्व साहित्य को प्राप्त हुआ उसकी समानता में अब तक अन्य रचनाओं की रचना सम्भव नहीं हो पाया। अस्तु ऐसी महान रचना से `रघुवंश दीपक` की तुलना करना उचित नहीं प्रतीत होता और फिर उस स्थिति में जब कवि ने स्वयं ही उसे अपनी प्रेरणा का स्त्रोत स्वीकार कर लिया हो।

आलोच्य काल (सं० १५००-१८०० वि०) में इस धारा की दूसरी महत्वपूर्ण रचना आचार्य केशवदास जी की `रामचन्द्रिका` का नाम लिया जा सकता है। किन्तु जैसा कि इसके परिचय में यथावसर यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि विद्वानों के मत से इसे प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य के कोटि की रचना मानने में ही संकोच होता है, `रघुवंश दीपक` की तुलना में कैसे ठहर सकती है। आचार्यत्व एवं चमत्कार की दृष्टि से उसका महत्व असंदिग्ध है किन्तु आचार्यत्व की दृष्टि से भले ही केशवदास जी की `रामचन्द्रिका` छन्दों तथा अलंकारों की प्रयोग शाला के रूप में अपना अलग महत्व रखती हो किन्तु वस्तु परक दृष्टिकोण से `रघुवंश दीपक` उससे श्रेष्ठ रचना ठहरती है इसमें कोई सन्देह नहीं। वस्तु वर्णन, भाव व्यंजना, काव्य में गम्भीर तथा मार्मिक स्थलों की योजना, तथा युगीन चेतना की सफल अभिव्यक्ति जितने सशक्त रूप में `रघुवंश दीपक` में मिलती है उसका एक प्रकार से `रामचन्द्रिका` में अभाव है।

हिन्दी राम काव्य धारा की एक अन्य महत्वपूर्ण प्रबन्धात्मक रचना गोविन्द रामायण है किन्तु युद्ध प्रधान रचना होने केकारण उसमें भी जीवन के समग्र चित्र के दर्शन नहींहोते । कथावस्तु की दृष्टि से उसमें न तो जीवन दृष्टि का उतना विस्तार है और न उसमें गम्भीर और मार्मिक स्थलों की ऐसी योजना ही है जिससे पाठक को रसात्मक बोध के उच्च स्तर पर ले जाकर रस मग्न किया जा सके । ' गोविन्द रामायण ' में इतिवृत्तात्मकता अधिक है जिससे कतिपय भाव पूर्ण स्थलों की अवहेलना हो गई है। ऐसे स्थलों में राम की बाल क्रीड़ा, चित्रकूट प्रसंग, सीताहरण जैसे मार्मिक तथा गम्भीर प्रसंग भी चलताऊ ढंग से ही कहे गये हैं । जब कि 'रघुवंश दीपक ' के यह स्थल अत्यन्त भाव पूर्ण रसमयता को लिये विवेक संयुंत दिखाई देते हैं । कवित्व की दृष्टि से भी 'गोविन्द रामायण ' 'रघुवंश दीपक ' के समकक्ष नहीं ठहरती। भाषा प्रयोग , शब्द शक्तियों के उचित समाहार तथा काव्य गुणों के संयोजन में 'रघुवंश दीपक ' का कवि ' गोविन्द रामायण ' के कवि की अपेक्षा अधिक सफल दिखाई देता है। इस प्रकार ' रघुवंश दीपक ' गोविन्द रामायण' से उच्च कोटि की रचना ठहरती है ।

आलोच्य काल की अन्य रचनाओं में 'रघुवंश दीपक ' जैसी व्यापकता तथा काव्य चेतना के दर्शन नहीं होते । हम यह कह चुके हैं कि रीतिकालीन काव्य चेतना के कारण इसकाल की रचनाओं में जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हो पाई ।' राम काव्य धारा के अन्तर्गत ही इस काव्य चेतना से प्रभावित कवियों ने राम के बिहारादि के वर्णन में विशेष रुचि प्रदर्शित की है उनके जीवन के समग्र चित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया । यही कारण है कि अवध- विलास , सीतायन, अवध सागर, सीता चरित जैसी रचनायें श्रृंगारिकता के बोझ से दबी हुई एकांगी हो गई है । यद्यपि उनमें भावपूर्ण स्थलों की भरमार है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि हिन्दी राम काव्य धारा के अन्तर्गत प्राप्त होने वाली समस्त रचनाओं में

`रघुवंश दीपक` का स्थान, `रामचरित मानस` पश्चात् ही द्वितीय स्थान पर आता है। साथ ही यदि भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल तक की सम्पूर्ण प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा का विधिवत् सम्यक् अध्ययन किया जाये तो `रघुवंश दीपक`, इन दोनों कालों के मध्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में अपरिहार्यत: ठहरती है। इसी प्रकार यदि काव्य भाषा के रूप में अवधी के विकास का अनुशीलन किया जाये तो हिन्दी राम काव्य धारा की अन्य रचनाओं के साथ ही `रघुवंश दीपक` की काव्य भाषा का अध्ययन अपरिहार्य ठहरता है। हिन्दी राम काव्य धारा में राम के स्वरूप विकास तथा राम-कथा के अन्य पात्रों के चारित्रिक विकास की दृष्टि से भी `रघुवंश दीपक` का अध्ययन इस काव्य धारा की महत्वपूर्ण की महत्वपूर्ण कृति `रामचरित मानस` की भांति अपरिहार्य ठहरती है। अतएव हम यह कह सकते हैं कि `रघुवंश दीपक` के अध्ययन के बिना हिन्दी राम काव्य धारा से सबंधित कोई भी विषय अधूरा ही समझा जायेगा।

अन्त में,

इस काव्य धारा से सम्बन्धित भावी अध्ययन की कतिपय उन दिशाओं की ओर संकेत करके प्रस्तुत प्रबन्धका उपसहांर करना चाहूंगा जिनकी ओर इस धारा के काव्य में रुचि रखने वाले शोधार्थियों का ध्यान जाना इस धारा की अन्य महत्व पूर्ण कृतियों के मूल्यांकन के लिये आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तुत प्रबन्ध में विवेचित ऐसी अनेक महत्वपूर्ण रचनायें है जिन पर स्वतंत्र रूप से कार्य किये जा सकते हैं। इनमें व गोविन्द रामायण का नाम विशेषरूप से लिया जा सकता है। इसी प्रकार हिन्दी के प्रबन्ध काव्यों के शिल्प विधान के विकास के अध्ययन में भी प्रस्तुत प्रबन्ध में विवेचित कतिपय नवोपलब्ध रचनाओं से महत्वपूर्ण सहायता ली जा सकती है। काव्य भाषा के रूप में अवधी के विकास तथा सामर्थ्य पर भी स्वतंत्र अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट दिखाई देती है।

सम्प्रति प्रस्तुत प्रबन्ध में भावी अध्ययन की जिन नवीन दिशाओं की ओर संकेत किया जा चुका है उन पर विद्वानों तथा शोधार्थियों द्वारा किये

जाने वाले कार्य के प्रति पूर्ण आशा-वान होकर इस प्रबन्ध को पूर्ण करता हूं। इस वक्तव्य के साथ लेखक का नम्र निवेदन है कि प्रत्येक अनुशीलन की अपनी सीमायें होती हैं और यह भी अध्ययन भी अपनी विषय सीमा में रहकर ही प्रस्तुत किया गया है। लेखक का स्पष्ट मत है प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा की जिन अनेक कृतियों से संक्षिप्त विवेचन द्वितीय अध्याय में प्रस्तुत किये गये हैं, उनमें से कुछ पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन की अपेक्षा अभी बनी हुई है और उसे विश्वास है कि ऐसे अध्ययनों से और भी महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आ सकेंगे।